❍ Year : 3 ❍ Issue : 12 ❍ Joint Issue June 2019 ❍ ISSN : 2456-0898

GLOBAL THOUGHT

ग्लोबल थॉट

(MULTI DISCIPLINE MULTI LANGUAGE RESEARCH JOURNAL)

(An International Refereed Quarterly Research Journal)

(A Scholarly Peer Reviewed Journal)

Special Note :

Anti national thoughts are not acceptable.

Patron :

Prof. M.M. Agrawal

(Former Dean, Arts Faculty & H.O.D. Sanskrit, University of Delhi, Delhi)

Prof. D.S. Chauhan

(Former H.O.D. Sanskrit, Magadh University, Bodhgaya, Bihar)

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक रूपेश कुमार चौहान द्वारा 47, ए-3 ब्लॉक, गली नं. 5, धर्मपुरा एक्सटेंशन, (नजदीक संकट मोचन मंदिर), पी.एस. नजफगढ़, दिल्ली से प्रकाशित एवं डॉल्फिन प्रिंटोग्राफिक्स, 4 ई/7, पाबला बिल्डिंग, झंडेवालान् एक्सटेंशन, नई दिल्ली में मुद्रित।

सम्पादक-रूपेश कुमार चौहान

Ph. 09555222747, 9267944100, 9555666907

प्रकाशनार्थ सूचना

* लेखक से अनुरोध है कि शोध-पत्र वॉकमैन चाणक्य 905 या क्रुतिदेव फॉन्ट में वर्ड या पेजमेकर में टाइप (टङ्कण) कराकर शोध-पत्रिका के ई-मेल पर प्रेषित करें।
* शोध-लेख **हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में** न्यूनतम 1500 शब्द एवं अधिकतम 5000 शब्द तक मान्य है तथा इसके साथ लेखक का पद-नाम के साथ स्वयं की फोटो (छवि-चित्र) अत्यन्त अनिवार्य है।
* प्रकाशनार्थ प्राप्त लेख सलाहकार परिषद् एवम् संपादक मण्डल की अनुमति के पश्चात् स्तरीय होने पर ही प्रकाशित होगा।
* लेख में यदि चित्र का प्रयोग हुआ है तो उसे भी अवश्य प्रेषित करें।
* **'ग्लोबल थॉट'** किसी भी तरह के परामर्श का स्वागत करती है, इसलिए अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें।
* यह स्पष्ट किया जाता है कि शोध पत्र में प्रस्तुत तथ्य शोध लेखक के अपने विचार हैं तथा इसमें सलाहकार परिषद् एवं सम्पादक मण्डल के विचारों की सहमति होना आवश्यक नहीं है। अतः लेख के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है।
* शोध-पत्रिका की किसी भी सामग्री को प्रकाशक एवं मुद्रक की जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशन अनुचित होगा।
* अपेक्षित आर्थिक सहयोग अथवा अंशदान के लिए हम आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।
* **कृपया लेख के साथ अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो अवश्य भेजें।**
* **पत्रिका का वितरण निःशुल्क किया जाता है एवं विशेष अनुदान के लिए किसी पर कोई प्रतिबंध नहीं है। प्रकाशन के लिए कोई भी आवश्यक शुल्क नहीं है।**
* **प्रत्येक लेख हमारी विशेषज्ञ समीक्षा समिति के द्वारा त्रिस्तरीय स्तर पर समीक्षित होकर प्रकाशित हेतु स्वीकृत किया जाता है।**

© सर्वाधिकार सुरक्षित : रूपेश कुमार चौहान

ISSN : 2456-0898

विशेष सूचना : शोध पत्रिका में प्रकाशित लेखों में दिए गये तथ्यों और इनसे सम्बन्धित किसी भी विवाद का पूर्ण दायित्व लेखक का होगा, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक एवं पत्रिका से सम्बन्धित अन्य किसी भी व्यक्ति का नहीं। प्रेषित स्पष्टीकरण अवश्य प्रकाशित किया जायेगा।

- सभी पद अवैतनिक एवं परिवर्तनीय हैं।
- **'ग्लोबल थॉट'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।
- सारे भुगतान मनीआर्डर : चेक/ बैंक ड्राफ्ट **'वाक् सुधा'** के नाम से किए जाएं। कृपया दिल्ली से बाहर के चेक में बैंक कमीशन के 35.00 रुपये अतिरिक्त जोड़ें।

Registered Office : *H.No. 47, A-3 Block, Gali No. 5, Near Sankat Mochan Mandir, Dharampura Extn., Najafgarh, Delhi-110043*
Ph. 09555222747, 9267944100, 9555666907

अनुक्रमणिका

Editorial -- 9

Hedonism in John Braine's Novel Room at the Top -- 10
Dr. Rajendra Prasad Singh

द्वैत-वेदान्त में तत्त्व 15
डॉ. राजेश कुमार

काव्य हेतु : एक समीक्षा 20
डॉ. रूपेश कुमार चौहान

आधुनिक चेतना की प्रतीक 'राजमती' (बीसलदेव रासो के परिप्रेक्ष्य में) 22
डॉ. कैलाश नारायण तिवारी

सामाजिक शोध एवं सर्वेक्षण पद्धति : पटना के संदर्भ में विशेष अध्ययन 27
दीनानाथ रजक

Revisiting the revolt of 1857 ------------------ 33
Ruby Kumari

Role of Indian Nationalist Business Class in Indian Nationalism in the Inter War Period --------------------------------- 38
Abhishek Priyadarshi

Main Fuctions of the Ego-Strength ---------- 42
Dr. Uday Pratap Singh

अवतारवाद की कल्पना एवं हिन्दू धर्म में वैष्णव धर्मसम्प्रदायों का विकास 44
कल्पना कुमारी

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम और मानवीयता 54
डॉ. राम किशोर यादव

अम्बेडकर सम्पादित 'मूकनायक' पत्रिका और दलित आंदोलन 57
डा. प्रदीप कुमार

कवि निराला की प्रयोगधर्मिता 63
डॉ. अनिल राय

Recalcitrant histories of sexuality in India in Colonial literature and vernacular archives --- 68
Rakesh Kumar

A Spiritual Study of Aurobindo's Theory of Evolution ---------------------------- 72
Dr. Kundan Kumar

The History of Communalism in Modern India --------------------------------- 74
Ruby Kumari

A Study of the Prospects of India-South Africa Defence Cooperation ---------- 78
Neha Nikita

Role of SHGs in Women Empowerment: A study with A Focus on "Swashakti and Swayamsidha" programme in Bihar state of India ------------------------------------- 86
Dr. Seema Verma

संस्कृत साहित्य में तद्धितान्त पदों की पहचान एवं विश्लेषण 99
साक्षी

Zeta function of Riemann and Associated Function Regarding Jensen polynomials ------------------------------------- 105
Dr. Satyandra Kumar

An overview of the English Absurd Drama: Nature and Characteristics -------- 110
Binay Kumar Singh

कामन्दक के व्यापार सम्बन्धी चिन्तन 113
डॉ. संतोष कुमार सुमन

झारखण्ड में मुण्डा जनजाति का आर्थिक संसाधन : एक ऐतिहासिक अध्ययन 118
डॉ. महेश्वर द्विवेदी

Concept of United Nations Peacekeeping -- 124
Mithilesh Kumar Singh

Pesticides: Consumption and Eco-friendly Substitutes in and around Jaipur -- 129
Dr. Sita Ram

कालिदास के ग्रन्थों में पर्यावरण एक समीक्षात्मक अध्ययन 133
डॉ. विद्याकर द्विवेदी

दयानन्दीय-पाणिनिशिक्षा ऋग्वेदीय शिक्षा में अन्तर 135
डॉ. अजित कुमार

स्मार्ट सिटी जयपुर शहर के नगरीय विकास का शोधपरक अध्ययन 139
डॉ. धर्मेन्द्र सिंह चौहान/डॉ. नरेश कुमार रावत

मीडिया और राष्ट्रवाद 145
डॉ. मीना शर्मा

प्रकृति, संस्कृति, शहर के बरअक्स स्त्री-संवेदना 149
डॉ. रंजीत सिंह

निराला के निबंधों में समाज और संस्कृति........ 153
डॉ. सरोज कुमारी

Terrorism : Conceptual Dimensions -------- 158
Dr. Suman

भारत में साइबर अपराध : समस्या एवं समाधान 165
डॉ. युवराज कुमार

जैन परम्परा के अलंकारिक 172
डॉ. शंकर नाथ तिवारी

Some Aspects of Revenue System under the Gangas of Karnataka ----------- 182
Yogender Dayma

जेल जीवन की अभिव्यक्ति : अज्ञेय के संदर्भ में 189
डॉ. त्र्यम्बक नाथ त्रिपाठी

State and Legitimation under the Western Gangas----------------------------- 195
Yogender Dayma

शाहजहाँपुर-नीमराना-बहरोड (SNB) नगरीय समूह के नगरीय भूमि उपयोग प्रारूप का शोधपरक अध्ययन 203
करतार सिंह

Analysis of Fiscal Performance of Bihar --- 211
Mukesh Kumar

'शुद्धाद्वैत'-वेदान्त में 'पुष्टिभक्ति' 216
डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा

महाभारत में प्रतिबिम्बित राजधर्म 224
तूलिका बंसल

हिन्दी-भाषा की चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ......... 227
डॉ. तृप्ता

The Creation of New Public Sphere through Neo-Buddhism by Dr. B.R. Ambedkar ----- 231
Ruchika Singh

औपनिवेशिक दौर में 'चांद' का 'अछूत अंक' और दलित समाज 234
डॉ. अश्वनी कुमार

Agriculture and Food: A Sustainable Approach in Indian Perspectives ------------ 240
Indra Narayan Raman

From the Theocracy to Constitutional Monarchy in the Bhutan ------------------------------------ 245
Anju Kumari

भक्त सूरदास की भक्ति भावना 249
डॉ. राजमोहिनी सागर

उच्च शिक्षा में संस्कृत भाषा के अध्ययन का महत्त्व 253
डॉ. सन्ध्या राठौर

हिन्दी कहानी का आरंभिक दौर और प्रेमचंद .. 257
डॉ. आशुतोष कुमार सिंह

आदर्श और यथार्थ के द्वंद्व के सम्बन्ध में प्रेमचंद की कहानियों में उत्तरोत्तर विकास.................... 260
डॉ. रत्नेश कुमार सिंह

Ranchi'r 'Shanti Dham': Jyotirindranather Sadhan Kshetra --------------------------------- 265
Anirban Sahu

शोध-पत्र

कवि निराला की प्रयोगधर्मिता

डॉ. अनिल राय

साहित्य में नवीन प्रयोग की आवश्यकता तब होती है जब इसके मौजूदा प्रतिमान अपर्याप्त और निष्प्रभावी हो जाते हैं। समकालीन सामाजिक-सांस्कृतिक दबाव भी इस पर किसी न किसी रूप में कार्य कर रहे होते हैं। परम्परा से चले आ रहे काव्यांग कथ्य, छन्द, बिम्ब, प्रतीक आदि समय के साथ अपनी प्रभाव-क्षमता खोते चले जाते हैं। इन्हें पुन: प्राप्त करने के लिए कवि-साहित्यकार अपनी कल्पनाशीलता एवं प्रतिभा का भरपूर उपयोग करते हुए नये-नये प्रयोगों को जन्म देते हैं। 1789 की फ्रांसीसी क्रांति ने केवल स्वाधीनता, समता और बंधुत्व का ही वैचारिक संदेश नहीं दिया बल्कि इस नवक्रांति का प्रतिफल साहित्य में भी नये कथ्यों, बिम्बों, प्रतीकों व काव्य रूपों इत्यादि के रूप में दिखायी पड़ा। वर्तमान साहित्य की सशक्त विधाओं में से एक उपन्यास नामक विधा भी इन्हीं नये विचारों एवं प्रयोगों के रास्ते अस्तित्व में आयी। नवजागरण के साथ नये युग में साहित्यकारों के समक्ष नये-नये प्रयोगों की सम्भावनाएँ प्रस्तुत हुई। सामंतवादी व्यवस्था से उत्पन्न सामाजिक-आर्थिक गैरबराबरी के प्रति जिस तरह का विद्रोह फ्रांस की क्रांति में हुआ वैसा विद्रोह अपने यहाँ नहीं हुआ। इसलिए यहाँ के नवजागरण-आन्दोलन में अतीत के प्रति मोह के साथ नवीनता के प्रति एक तीव्र आकांक्षा का भाव भी पल्लवित हुआ। छायावाद और विशेषरूप से निराला के काव्य में भी नवीनता के प्रति एक उत्कट आकर्षण सर्वत्र विद्यमान है। उनके काव्य में स्थापित व्यवस्थाओं के प्रति असंतोष इसलिए है क्योंकि ये अपने निजी स्वार्थों के चलते सर्वसाधारण से दगा करने वाली साबित होती रहीं। सभ्यता के प्रति निराला का विद्रोह नितांत नया था। उन्होंने अपनी कविता में इस पर भी खुलकर लिखा-''दगा की, इस सभ्यता ने दगा की।''[1]

निराला एक ऐसे कवि के रूप में विख्यात हैं जिन्होंने पारंपरिक साहित्य के स्थापित मानदंडों को न केवल चुनौती दी थी बल्कि युगानुकूल कुछ नितांत नये मानदंड भी स्थापित किये। संवेदनशीलता और प्रतिभा की उनमें कोई कमी नहीं थी। इसलिए वे एक व्यापक जीवन-दृष्टि संपन्न साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए। विद्रोह करने का साहस निराला में अद्भुत था। इसीलिए नये-नये प्रयोग करने की प्रवृत्ति भी उनमें शुरू से अंत तक दिखायी पड़ती है। आधुनिक हिंदी काव्य में निराला ऐसे कवि हैं जिनमें प्रयोगशीलता की प्रवृत्ति सबसे पहले देखने को मिली थी। बँधी-बधायी लीक से कविता को मुक्त कराने एवं उसे नवीनता का परिधान उपलब्ध कराने की जो बेचैनी उनमें दिखी थी वह उस युग के किसी भी कवि में दुर्लभ थी। काव्य-संवेदन, काव्यरूप, प्रतीक, बिम्ब, नाद, लय आदि के विभिन्न स्तरों पर उन्होंने जिस प्रकार के प्रयोग किये, वे आगे आने वाली साहित्यिक पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत बने। निराला की प्रयोगधर्मिता की सबसे बड़ी खासियत यह है कि उनके काव्य में प्राचीनता का पूर्णत: अस्वीकार्य वहीं पर है जहाँ वह मृतप्राय: सी है और नवीनता के प्रयोग का आग्रह भी वहीं तक सीमित है जहाँ तक वह साहित्य का हिताकांक्षी हो। उनके काव्य में नवप्रयोग की अकुलाहट तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों से उपजी हुई अकुलाहट है।

निराला ने काव्य-संवेदना के स्तर पर अनेक नये-नये प्रयोग किये। वे छायावादी आंदोलन के कवि होते हुए भी अपनी प्रकृति के अनुरूप इसकी सीमाओं का बार-बार अतिक्रमण करते रहे। इस विषय में प्रसिद्ध आलोचक दूधनाथ सिंह लिखते हैं-''अपने समकालीनों में निराला ही एक ऐसे कवि हैं, जिनके विराट, सर्वग्रासी प्रतिभाशाली व्यक्तित्व में काव्य-रचना-प्रक्रिया के अनेक स्तर हर समय साथ-साथ क्रियाशील रहे हैं। छायावादी काव्य-सिद्धान्तक तो निराला के कालजयी कवि-व्यक्तित्व के एक ही पहलू में समा जाते हैं। उनकी काव्य-रचना का बहुत बड़ा भाग

ऐसा है, जो किसी भी काव्य-सिद्धान्त के घेरे में नहीं अँटता।''[2] स्वाधीनता निराला का सबसे बड़ा मंत्र था, जिसे उन्होंने जड़-चेतन समेत सभी जीवों के जन्मजात अधिकार के रूप में देखा। इसे महिमामंडित करते हुए उन्होंने लिखा-''एक स्वाधीनता का बजता है विपुल हर्ष!/'स्वाधीन' का ही एक और अर्थ 'निर्भय' है।''[3] स्वाधीनता उन्हें सभी प्रकार के बन्धन, दबाव एवं भय से मुक्त कराती है। छायावादी दौर में निराला ने विविध प्रवृत्तियों एवं अलग-अलग तेवर की रचनाओं का सृजन किया जिन्हें पढ़कर विश्वास ही नहीं होता किये एक ही कवि के द्वारा सृजित है। एक ओर 'जुही की कली' और 'संध्या-सुन्दरी' जैसी शुद्ध छायावादी संस्कार की कविताएँ हैं, तो वहीं दूसरी ओर 'बादलराग', 'तोड़ती पत्थर' और 'भिक्षुक' जैसी ठोस यथार्थवादी कविताएँ। इनके अतिरिक्त 'महाराज शिवाजी का पत्र', 'जागो फिर एक बार' और 'तुलसीदास' जैसी राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविताएँ लिखकर उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि काव्य-संवेदनाओं में यह वैविध्यपूर्ण उत्कृष्टता उनकी प्रयोगधर्मी प्रवृत्ति के कारण ही सम्भव हो पायी है। मानव जीवन के जितने भी पक्ष हो सकते हैं उनकी अभिव्यक्ति जिस नवीनता के साथ निराला के यहाँ मिलती है वह अन्यत्र दुर्लभ है। प्रसिद्ध आलोचक रमेशचंद्र शाह ने अपनी पुस्तक 'छायावाद की प्रासंगिकता' में निराला को पहला प्रयोगवादी कवि घोषित किया है। यहां वे लिखते हैं-''आरंभिक काल में ही जिस प्रकार 'जागो फिर एक बार', 'शेष', 'अध्यात्मफल' जैसी कविताओं में उनकी काव्य-प्रतिभा के त्रिविध विस्फोट की सूचना मिल जाती है उसी प्रकार आगे भी वे इनमें से हर रंग को लगातार माँजते चले जाते हैं और एक समय ऐसा आता है जब उनकी यह बिखरी सी शक्तियाँ अधिक एकाग्र रूप में विन्यस्त हो आती हैं।''[4] निराला ने अपनी कविता में युगजीवन से संबंधित किसी भी विषय को छोड़ा नहीं है। 'यमुना के प्रति', 'कविता', 'अधिवास', 'रानी और कानी', 'गर्म पकौड़ी', 'झिंगुर डटकर बोला', 'बाँधो न नाव', 'दुरित दूर करो' आदि असंख्य ऐसी कविताएँ हैं जिन्हें पढ़कर उनके काव्य-संवेदन के वैविध्य, विस्तार एवं उनके सफल प्रयोगों का बोध होता है।

निराला जयशंकर प्रसाद का बहुत सम्मान करते थे। किंतु जहाँ भी वे प्रसाद से असहमत होते थे बिना संकोच के सम्मानपूर्वक अपनी असहमति दर्ज भी करा देते थे। दोनों की काव्य-प्रवृत्तियों एवं कवि-प्रकृति में काफी असमानता भी थी। प्रसिद्ध आलोचक रामस्वरूप चतुर्वेदी दोनों के बीच के रिश्ते को इतिहास में परंपरा और विद्रोह का रिश्ता मानते हैं। इसका उद्घाटन करते हुए डॉ. चतुर्वेदी लिखते हैं- ''निराला अपने लिए प्रसाद से भिन्न मार्ग चुनते हैं पर यथावश्यक रूप में उन्हें सम्मान देते चलते हैं। वे अपने एक पत्र में वरिष्ठ कवि प्रसाद को लिखते हैं व्यंग्य के पैनेपन का सही प्रयोग करते हुए-'पर मैंने सुना है आप उपनिषदों से नीचे उतरना पसन्द नहीं करते फिर भी मैं प्रयत्न करूँगा यदि आप को नीचे उतार सकूँ।''[5] जाहिर सी बात है कि यहां निराला का निशाना प्राचीन परम्पराओं के प्रति प्रसाद के मोह की ओर है जिसके प्रति विद्रोह कर एक नयी राह बनाना उनका अभीष्ट था। उन्होंने कविता में युगों से चली आ रहीं स्थापित मान्यताओं का न केवल प्रतिकार किया अपितु हिंदी में मुक्त छन्द की एक नयी अवधारणा को वे पहले-पहल लेकर आये। नये युग में नवीनता के लिए किया गया यह प्रयोग केवल छन्दों के स्तर पर ही नहीं घटित हुआ बल्कि इसकी अनुगूँज उनके साहित्य के विविध स्तरों पर सुनायी पड़ी। निराला ने आरम्भ से ही अपनी प्रतिभा को नव प्रयोगों की साधना में साधे रखा जिसका परिणाम यह हुआ कि अपनी काव्य-रचना की शुरुआत ही उन्होंने मुक्त छन्द में की। 'जुही की कली' जिसकी रचना उन्होंने 1916 में की, मुक्त छन्द में लिखी गयी हिंदी की पहली रचना साबित हुई।

निराला की यह खासियत है कि उन्होंने प्राचीन परम्परा से तो विद्रोह किया ही साथ ही समय-समय पर स्वयं द्वारा स्थापित मान्यताओं का परीक्षण करते हुए उनका भी प्रतिकार किया। जहाँ भी अपनी पूर्वस्थापित मान्यताओं से वे असहमत होते, उन्हें भी ध्वस्त करने से कभी पीछे नहीं हटते। इस प्रकार स्वयं द्वारा स्थापित मान्यताओं को भी उन्होंने परम्परा बनने से रोकने की भरसक कोशिश की और सर्वत्र नये प्रयोगों की संभावनाओं के द्वार खोले रखने पर बल दिया। यह समझना आवश्यक है कि निराला अनायास ही मुक्त छन्द का प्रयोग नहीं करते हैं। वे जब भी कविता में नये विषयों का संधान करते हैं तभी उन्हें इसकी आवश्यकता अधिक पड़ती है। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है कि कविता में अवरोध और प्रवाह के मध्य सन्तुलन को साधने के लिए उन्हें मुक्त छन्द की सख्त दरकार थी। उनके प्रयोग-वैविध्य की ओर संकेत करते हुए आलोचक रामस्वरूप चतुर्वेदी लिखते हैं-''यह एक विलक्षण बात है कि उनमें क्लासिकी, रोमांटिक तथा आधुनिक तत्त्व एक साथ दिखायी देते हैं। निराला में प्रसाद, निराला, अज्ञेय तीनों घुले-मिले हैं। मुक्त छन्द और छन्दबद्ध, 'राम की शक्ति पूजा' और 'कुकुरमुत्ता', 'तत्सम-तद्भव-देसी, प्रबन्ध गीत-मुक्तक-विधान, काव्यभाषा और बन्ध के इन विविध स्तरों पर निराला समान क्षमता के साथ सक्रिय हैं। इतने स्तरों पर ऐसा वैविध्य अन्यत्र दुर्लभ है। इस वैविध्य को

साधने के कारण ही निराला बिना महाकाव्य लिखे हुए महाकवि हैं।''[6]

निराला के नवप्रयोगों की शुरुआत 'जुही की कली' से हुई जो उनकी आरंभिक रचना है। यहाँ उल्लेख्य है कि नवीनता के ग्रहण की प्रक्रिया में उन्होंने परम्परा का पूर्णतः त्याग नहीं किया है, बल्कि दोनों का अद्भुत सामंजस्य प्रस्तुत किया है। भाषिक स्तर पर इस कविता में संस्कृतनिष्ठ और बोलचाल की भाषा का संतुलित मिश्रण विद्यमान है--

विजन-वन-वल्लरी पर
सोती थी सुहाग-भरी-स्नेह-स्वप्न-मग्न,
अमल कोमल-तनु-तरुणी-जुही की कली,

डोल उठी वल्लरी की लड़ी जैसे हिंडोल।
इस पर भी जागी नहीं /चूक-क्षमा माँगी नहीं।[7]

वसन्त निराला की सर्वाधिक प्रिय ऋतु है जो प्रकृति में सर्वत्र नवीनता का संचार करने आती है। नवीनता के प्रति निराला की तीव्र ललक उनकी 'वसन्त समीर' कविता में भी द्रष्टव्य है–

भरो पुलक नव प्रेम प्रकम्पित
कामिनियों के नव-तन में,
खोलो नवल प्रातमुख ढक-ढक
अलख बादलों से, क्षण में।
नवल प्राण नवगान गगन में
फूटें नवल वृन्त पर फूल।
भरे जागरण की किरणों से
जग के जीवन के युग फूल।[8]

कविता में नवीन प्रयोग की दृष्टि से निराला की 'अधिवास' कविता भी काफी महत्त्वपूर्ण है। भाषा और छन्द दोनों ही स्तरों पर अनेक सफल प्रयोग यहाँ देखने को मिलते हैं। इसी प्रकार 'जागो फिर एक बार' को उन्होंने मुक्त छन्द में रचा। निराला में बाधा विहीन छन्द के प्रति एक विशेष आकर्षण था जिसकी ओर उन्होंने कई स्थलों पर संकेत भी किया है। मुक्त छंद की साधना और उसमें अभिव्यक्ति का सुख उनके लिए ब्रह्मानन्द से तनिक भी कमतर नहीं है--

मुक्त हो सदा ही तुम / बाधाविहीन बन्ध छन्द ज्यों,
डूबे आनन्द में सच्चिदानन्द स्वरूप।[9]

कवि ने यहाँ 'मुक्त छन्द' का प्रयोग उपमान के रूप में करके उसकी महत्ता को और अधिक परिवर्द्धित कर दिया है। मुक्त छन्द के प्रयोग में निराला ने ध्वन्यात्मकता का भी विशेष ध्यान रखा है। 'बादल राग' कविता इसका सशक्त उदाहरण है जिसमें कवि के द्वारा बादलों की विद्रोही एवं जीवनदायिनी प्रकृति का बहुत ही सजीव वर्णन हुआ है। बादलों की गर्जना पूरी सृष्टि को न केवल आन्दोलित कर देती है अपितु जीर्ण शरीर वाले कृषकों को नवजीवन के प्रति आश्वस्त भी करती है। यह कविता अपनी नवीन ध्वन्यात्मक अभिव्यक्ति में बेजोड़ है--

बार-बार गर्जन / वर्षण है मूसलाधार,
हृदय थाम लेता संसार, सुन-सुन घोर वज्र हुंकार।
अशनिपात से शायित उन्नत शत-शतवीर,
क्षत-विक्षत हत अचल-शरीर,
गगन-स्पर्शी स्पर्द्धा-धीर।[10]

'तोड़ती पत्थर' कविता में निराला ने एक श्रमिक स्त्री के माध्यम से स्त्री-सौंदर्य का एक नया प्रतिमान तैयार किया है जो अपनी अभिव्यक्ति में सर्वथा अनूठा है। यह सौंदर्य-वर्णन रीतिकालीन दरबारों से निकलकर आधुनिक काल के ग्रीष्मकालीन दोपहर की तपती भू से सीधे जुड़ता है–

कोई न छायादार /पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बँधा यौवन, धन तनयन, प्रिय-कर्म-रत मन।[11]

यहाँ कवि रीतिकालीन गौरवर्णी नायिका की जगह आधुनिक श्रमरत नायिका के उस सौंदर्य को स्थापित करता है जो आभूषणों के बोझ से दबा नहीं है। यह सुन्दरी भारी-भरकम हथौड़े से पत्थरों पर पर बार-बार प्रहार करती है। श्रमिक स्त्री के हथौड़े से जो ध्वनि फूट रही है वह अपने प्रभाव में कवि को नैसर्गिक लगती है। निराला को यह ध्वनि इतनी प्रिय है कि उन्हें लिखना पड़ा -'सजा सहज सितार, / सुनी मैंने वह नहीं जो थी मधुर झंकार'।

निराला की लम्बी कविताएँ भी उनकी प्रयोगशील प्रवृत्ति से अप्रभावित नहीं हैं। इनमें जागरण-गीत, उद्बोधन-गीत, शोकगीत एवं आख्यानपरक आदि कविताएँ हैं। 'जागो फिर एक बार' उनका सशक्त उद्बोधन-गीत है जो देश के स्वाधीनता-आंदोलन की पृष्ठभूमि में लिखा गया है। कवि ने इसमें भारतीय दर्शन, इतिहास और संस्कृति के स्वर्णिम अतीत का स्मरण कराकर भारतीयों में एक नवीन जागृति का संचार किया। इसी प्रकार का संदेश 'महाराज शिवाजी का पत्र' शीर्षक कविता में भी व्यक्त हुआ है। आख्यान परक लम्बी कविताओं में 'राम की शक्ति पूजा' और 'तुलसीदास' में भी निराला ने सभी स्तरों पर नये-नये प्रयोगों को अंजाम दिया है। इस दृष्टि से सामाजिक-आर्थिक असमानता के प्रति व्यंग्य-विद्रोह करने वाली कविता 'कुकुरमुत्ता' भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। इस प्रक्रिया में उन्होंने जहाँ आधुनिक पाश्चात्य प्रभाव को ग्रहण किया, वहीं पारंपरिक स्थापत्य शैली का भी पूरा ध्यान रखा। 'यमुना के प्रति' शीर्षक कविता भारत की पारम्परिक आल्हा शैली की बुनियाद पर लिखी गयी तो 'सरोज स्मृति'

की शैली अंग्रेजी कवि टॉमस ग्रे की कविता 'एलेजी रिटन इन ए कंट्री चर्चयार्ड' से प्रभावित है। शोकगीत की इस शैली का प्रयोग हिंदी साहित्य के लिए नितान्त नया था। 'राम की शक्ति पूजा' की गणना निराला की सशक्ततम कविताओं में की जाती है। यहाँ भी निराला ने अपनी काव्य-प्रकृति के अनुरूप ही नये-नये प्रयोग किये हैं। भावबोध के साथ-साथ इसके कथा विन्यास में भी निराला की नवीन उद्भावना सर्वत्र नियोजित है। नाटकीयता, बिम्ब-विधान एवं उदात्त कल्पना ने 'राम की शक्तिपूजा' को महाकाव्य के रूप में स्थापित करने में बड़ी भूमिका निभायी है। निराला की एक बड़ी खासियत यह है कि वे भाव की जरूरत के अनुरूप भाषा का रूप-विन्यास करने में सिद्धहस्त हैं। 'राम की शक्तिपूजा' में शब्दों का चयन-गठन भी नितांत मौलिक है। कविता के आरम्भ में छन्द का एकदम नया रूप देखने योग्य है--'रवि हुआ अस्त! ज्योति के पत्र पर लिखा/ अमर रह गया राम-रावण का अपराजेय समर'। राम-रावण-युद्ध का जैसा वर्णन कवि निराला ने आरंभिक अठारह पंक्तियों में किया है वह अपने प्रभाव में अनूठा है। संस्कृतनिष्ठ समासबहुला शब्दावली यहां अर्थ-संप्रेषण की गरिमा को कहीं से भी क्षतिग्रस्त नहीं करती। कविता में ध्वन्यात्मकता एवं नाद-सौंदर्य की अभिवृद्धि हेतु जिस प्रकार का शब्द-चयन निराला ने किया है उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाये कम है–

प्रतिपल-परिवर्तित-व्यूह-भेद-कौशल-समूह-,
राक्षस विरुद्ध प्रत्यूह,-क्रुद्ध-कपि विषम-हूह,[12]

उल्लेखनीय है कि यहाँ आठ-आठ मात्राओं के बन्ध की रचना करना कवि निराला का प्रिय विधान है। प्रसंगों के अनुकूल भाषा-शैली के बदलते स्वरूप 'राम की शक्ति पूजा' के स्थापत्य-सौन्दर्य को एक नया आयाम देते हैं।

सामान्यत: हिंदी के मात्रिक छन्दों में दो या चार यतियों के विधान की परम्परा है। इस दृष्टि से 'राम की शक्ति पूजा' में भी निराला ने इस प्राचीन परम्परा को तोड़कर एक नया प्रयोग किया है। यहाँ उन्होंने चौबीस मात्राओं वाले लध्वन्त छन्द का प्रयोग किया है जिसमें तीन यतियों का विधान है–

राघव-लाघव-रावण-वारण-गत-युग्म-प्रहर,
उद्धत-लंकापति मर्दित-कपि-बल-विस्तरय[13]

'स्वाधीनता' और 'मुक्ति' निराला के सर्वाधिक प्रिय शब्द हैं। यह भावना उनमें जन्म से ही विद्यमान थी। 1924 में निराला की 'स्वाधीनता पर' शीर्षक से दो कविताएँ प्रकाशित हुई। पहली कविता में उन्होंने स्वाधीनता को दार्शनिक धरातल पर पारिभाषित किया और माया के अस्तित्व को खारिज करते हुए कहा--

माया है, माया क्या? / माया नहीं जानता मैं,
जानता हूँ एक बस, 'स्वाधीन' शब्द।[14]

तो दूसरी में 'स्वाधीन' शब्द को निर्भयता एवं निर्बन्धता के पर्याय के रूप में स्थापित किया। यहां कवि घोषित करता है कि भय ही सभी समस्याओं का कारण है। वही अन्याय और अव्यवस्था को जन्म देता है अत: इससे मुक्ति आवश्यक है--

समझा मैं/ भय ही व्यवस्था का जनक है,
निर्भय अपने को
और दुर्बल समाज को /करके दिखाना है-
'स्वाधीन' का ही एक और अर्थ 'निर्भय' है।[15]

निराला का यह अत्यन्त प्रसिद्ध कथन है कि मनुष्य की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है जिसका एकमात्र उद्देश्य साहित्य का कल्याण होता है। उनकी यही स्वाधीनता प्रेमी दृष्टि उनके प्रयोगधर्मी कवि को प्रोत्साहित करती है। निराला के प्रयोगों की विशेषता यह है कि उन्होंने इनमें परम्परा और उसके परिमार्जन पर भी उतना ही ध्यान दिया जितना कि नितान्त नवीन प्रयोगों पर। इन दोनों में सामंजस्य स्थापित कर एक नये सृजन की क्षमता निराला में अद्भुत थी। यही कारण है कि मुक्त छन्द को वे पारम्परिक कवित्त छन्द के विकास के रूप में देखते हैं। प्राचीन छन्द और अपनी जातीयता के प्रति समादर का भाव रखते हुए वे कहते हैं–''हिंदी में मुक्त काव्य कवित्त छन्द की बुनियाद पर सफल हो सकता है। कारण, यह छन्द चिरकाल से इस जाति के कण्ठ का हार हो रहा है। दूसरे, इस छन्द में एक विशेष गुण यह भी है कि इसे लोग चौताल आदि बड़ी तालों में तथा ठुमरी की तीन तालों में भी सफलतापूर्वक गा सकते हैं, और नाटक आदि के समय इसे काफी प्रवाह के साथ पढ़ भी सकते हैं। आज भी हम रामलीलाओं में लक्ष्मण-परशुराम-संवाद के समय वार्तालाप में छन्द का चमत्कार प्रत्यक्ष कर लेते हैं। यदि हिन्दी का कोई जातीय छन्द चुना जाये तो वह यही होगा।''[16]

निराला के काव्यगत प्रयोगों को मोटे तौर पर चार वर्गों के अंतर्गत रखकर समझा जा सकता है। गीत, प्रगीत, आख्यानपरक काव्य एवं गीति नाट्य। गीत-प्रगीत भारतीय लोक संगीत में परम्परा से चले आ रहे हैं। ऋतुगीत, प्रार्थना गीत, प्रेमगीत, लोकगीत, जागरण-गीत, उद्बोधन-गीत एवं गजल आदि में भी अनेक शिल्पगत प्रयोग निराला के द्वारा किए गये हैं। निराला के गीतों में गठित भाषिक रचना में एक विशिष्ट प्रकार का इन्द्रजाल सा है जो सबसे पहले पाठक को कसकर अपनी ओर खींचता है। वस्तुत: यह भाषा-विन्यास का 'प्राइमाफेसी सौंदर्य' है, जिसमें डूबने के बाद ही कोई इसके अर्थ-गाम्भीर्य का उद्घाटन करता है।

निराला के आत्मसाक्षात्कार का संवहन करता यह गीत अपनी नवीनता एवं आकर्षण में अद्‌भुत है–

बाँधो न नाव इस ठाँव बन्धु!/पूछेगा सारा गाँव बन्धु !
यह घाट वही जिस पर हँसकर,
वह कभी नहाती थी धँसकर,
आँखें रह जाती थी फँसकर,
कँपते थे दोनों पाँव बन्धु![17]

निराला के ऋतु गीतों में भी प्रयोग के नये-नये रूप दिखायी पड़ते हैं। उनकी एक कविता है 'घन-गर्जन से भर दो वन', जिसमें वे नवसृजन हेतु बादलों से गरजने-बरसने का अनुरोध करते हुए देखे जाते हैं। वे बादलों में समूचे वनप्रदेश तरु, पादप, लताओं आदि को नवीन जीवन देने की शक्ति का साक्षात्कार करते हैं–

घन-गर्जन से भर दो वन,/तरु-तरु पादप-पादप-तन।[18]

निराला के यहाँ बादल जितनी बार आते हैं वे मुक्तिदायी, विद्रोही एवं नवीनता के जन्मदाता के रूप में ही आते हैं। बादलों को लेकर जितने प्रयोग उनके काव्य में हुए हैं उतने शायद ही किसी के काव्य में मिलें। इसी प्रकार वसन्त, शिशिर, शरद आदि ऋतुओं से सम्बन्धित गीतों में भी निराला की नव सृजनशीलता जगह-जगह दिखायी पड़ती है। ऋतुगीतों के अतिरिक्त उन्होंने जितने भी प्रार्थना-गीत लिखे उनमें मुक्ति की उनकी चाह केंद्रीय भूमिका में रही। समूचे देश में बहुस्तरीय पराधीनता से मुक्ति की आकांक्षा-याचना उनकी प्रार्थनाओं का मूल कथ्य बनकर उभरी है। उदाहरण के लिए उनके द्वारा रचित प्रार्थना गीतों की कुछ पंक्तियाँ यहां उल्लेख्य हैं -

1. नर-जीवन के स्वार्थ-सकल/बलि हों तेरे चरणों पर माँ!

क्लेदयुक्त अपना तन दूँगा, / मुक्त करूँगा तुझे अटल।[19]
2. वर दे! वीणावादिनि वर दे!
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मन्त्र नव भारत में भर दे![20]
3. भारति, जय विजय करे! कनक शस्य कमल धरे![21]
4. जला दे जीर्ण-शीर्ण प्राचीन;/क्या करूँगा तन जीवन-हीन।
माँ तू उतर भारत की पृथ्वी पर /उतर रूपमय माया तनधर,
देवव्रत नरवर पैदा कर, / फैला शक्ति नवीन![22]

पूरे देश में एक नयी चेतना, नया जीवन एवं नयी स्फूर्ति की याचना करने वाली इन प्रार्थनाओं तथा उनमें किये गये नवप्रयोगों के माध्यम से निराला ने हिन्दी काव्य को काफी समृद्ध किया है। उन्होंने अपने काव्य में राष्ट्रीयता के नये-नये मूल्यों की नयी-नयी स्थापनाएँ की हैं। प्रार्थना-गीतों में वे अपने लिए कुछ भी नहीं माँगते। उन्हें जो भी चाहिए देश के लिए, भारत माँ के लिए और समस्त मानवता के लिए।

समग्रत: निराला एक ऐसे स्वाधीनता प्रेमी साहित्यकार हैं जिन्होंने न केवल राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पराधीनता से मुक्ति का स्वर बुलन्द किया अपितु साहित्यिक पराधीनता के खिलाफ भी जबरदस्त आवाज उठायी। इस क्रम में उन्होंने काव्य-संवेदना एवं भाषा-शिल्प दोनों ही स्तरों पर नये-नये प्रयोग कर हिंदी कविता को एक नयी गति एवं नयी दिशा प्रदान की। अपने विशद काव्य-संसार में उन्होंने जहाँ-जहाँ भी प्रयोग किये, वे सर्वत्र अपराजेय सिद्ध हुए।

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी-विभाग,
श्यामलाल कॉलेज (सांध्य),
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
ई-मेल : raidranil14@gmail.com

सन्दर्भ सूची

1. निराला रचनावली-2, संपा.- नन्द-किशोर नवल, राजकमल प्रकाशन,नयी दिल्लीी, 1992, पृष्ठ-185
2. दूधनाथ सिंह, निराला: आत्म-हन्ता-आस्थाठ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1993, पृष्ठ-15
3. निराला रचनावली-1, संपा.- नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1992, पृष्ठ-133
4. रमेशचन्द्रा शाह, छायावाद की प्रासंगिकता, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 2003, पृष्ठ-122
5. रामस्वरूप चतुर्वेदी, प्रसाद निराला अज्ञेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1989, पृष्ठ 3-62
6. वही, पृष्ठ-67
7. निराला रचनावली-1, संपा.- नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1992, पृष्ठ-41
8. वही, पृष्ठ-191
9. वही, पृष्ठ-154
10. वही, पृष्ठ-135
11. वही, पृष्ठ-343
12. वही, पृष्ठ-329
13. वही, पृष्ठ-329
14. वही, पृष्ठ-132
15. वही, पृष्ठ-133
16. वही, परिमल की भूमिका, पृष्ठ-428
17. निराला रचनावली-2, संपा.- नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1992, पृष्ठ-364
18. निराला रचनावली-1, संपा.- नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1992, पृष्ठ-245
19. वही, पृष्ठ-223
20. वही, पृष्ठ-224
21. वही, पृष्ठ-246
22. वही, पृष्ठ-258